आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 8 March, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *"हमें सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है .. तो .. अपने अंदर के सूक्ष्म मैं और मेरे पन से मुक्त होने का पूरा पूरा पुरुषार्थ करे "*

बाबा हम सभी को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए निरंतर गाइडेंस दे रहे है। जो आत्मायें सम्पन्न और सम्पूर्ण बनेंगी वे पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह विश्व गगन में चमकेगी। उनके द्वारा ही संसार से अज्ञान का अंधकार विनाश होगा। वे ही संसार को नई दिशा देने वाली होंगी। उन्हीं का बहुत ज्यादा महत्व संसार में होगा।

भगवानुवाच .. जरा आगे चलो, अंत का समय आने दो। जिन आत्माओं ने लम्बे काल से साथ निभाया है उनका इस सृष्टि पर कितना महत्व हो जायेगा। यह सभी देखेंगे।

तो हमें ध्यान देना है। हमें अपनी **लक्ष्य** की ओर चलना है। लक्ष्य को भूलकर और बातों में विचलित हो जाना यह इस समय बुद्धिमानी नहीं होगी।

सभी के प्रति **साक्षी भाव** धारण करते हुए, हर आत्मा अपना अपना पार्ट बजा रही है ऐसा साक्षी भाव रखते हुए हमें स्वयं को महान बनाना है।

किसी भी उलझनों में जो उलझकर रह जायेंगे वो अपनी मंजिल पर कभी नहीं पहुँचेंगे। और जो **लाइट हाउस** बन जायेंगे वो सारे संसार को मंजिल दिखायेंगे। उसपर चलने का मार्ग दिखायेंगे।

तो आईये हम **सम्पन्नता** और **सम्पूर्णता** के ओर चले। और दुसरा भगवान की वह बातें याद करे ...

मैं पन और मेरे पन का त्याग कर देना ही **सम्पन्न बनना** और **सम्पूर्ण** बनना है। यही आधार है। कितनी **सूक्ष्म** बात बाबा ने कही। परन्तु बड़ी सूक्ष्मता से यह मैं पन मनुष्य के अंदर आ जाता है।

हम कोई भी कार्य की सफलता को देख पहले बाबा का गुणगान करने लगते ...

" वाह् बाबा .. तुमने कितना अच्छा किया "

फिर अपना भी अपना भी गुणगान करने लगते ...

" हमने भी यह किया "

इसीलिए जब दोनों का गुणगान मिक्स हो जाता है तो आत्माओं पर हमारा गहरा प्रभाव नहीं पड़ता। क्योंकि यह सूक्ष्म मैं पन दूसरों की भावनाओं को समाप्त कर देता है।

बहुत सुन्दर बात बाबा ने कही है कि ...

" मैं पन का त्याग मेरे पन का त्याग ही आधार है अष्टरतन बनने की "

अष्टरतन बनने वाले को ऐसा योगयुक्त होने चाहिए, बाबा की शक्तियों को सूक्ष्मता से पहचान लेना चाहिए, कि मैं और मेरे का कोई अंश ही न रह जाये।

तो हम इसको बहुत सूक्ष्मता से ले। और चेक कर ले कहाँ सूक्ष्म रूप से मेरा पन तो नहीं है? बड़ी गहरी जड़ें है इन दोनों की। मेरा परिवार, मेरी धन-सम्पत्ति, मेरा मान-शान, मेरा संस्कार, मेरी सेवा।

मैं ...। मैं ...। यह सब बहुत चलता है। लेकिन जो आत्मायें मैं और मेरे का त्याग कर देंगे, बहुत बड़ी चीज़ है। **पाँच तत्वों** भी उनके गले में सफलता

की माला डालेंगे। वो प्रकृति के भी मालिक बन जायेंगे। और कदम कदम पर उन्हें सफलता प्राप्त होगी।

तो बहुत बड़ी बात है। इसपर हम जरा ध्यान दे। जिनको जीवन में आगे चलकर महान सेवायें करनी है, जिन्हें इस संसार को युग को बदलने में बाबा का बहुत बड़ा सहयोग करना है, वो मैं पन और मेरे पन से मुक्त होकर सम्पूर्ण समर्पण भाव से योगयुक्त हो जाये।

तो कमाल होगी .....।

आज सारा दिन हम इसपर बहुत ध्यान देंगे। और चेक करेंगे कहाँ कहाँ मैं पन और मेरा पन आता है। हो सके तो इसके लिए लिस्ट बना ले। और सारा दिन अभ्यास करेंगे ....

" फरिश्ता सो देवता बनने का "

एक ओर हमारी फ़रिश्ताई ड्रेस टांगी है ... देह रूपी वस्त्र ...

और दुसरी ओर देवताई ड्रेस ...

" और मैं आत्मा इस ब्राह्मण शरीर में हूँ .. यहाँ से निकलकर देवताई स्वरुप धारण कर लेती हूँ .. फिर वहाँ से निकलकर फरिश्ता स्वरुप "

इसतरह कभी फरिश्ता स्वरुप में .. कभी देव स्वरुप में स्वयं को अनुभव करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org